अंक-11 वर्ष-2015 अलख नवंबर-2015

विषय सूची

01. सम्पादकीय 01

02. प्रवचन ब्रह्मलीन सदगुरूदेव स्वामी श्री अलखानंद जी महाराज..... 02

03. स्वस्थ कौन ?..... 06

04. गुरु सेवा 07

05. विचारणीय वचन 09

06. विशुद्ध अध्यात्मिक संवाद..... 11

07. Dhammapada 12

08. जीर्ण कब्ज के ईलाज..... 14

09. दिवाली..... 15

10. पावन श्री अलख ज्यन्ति सूचना. 16

11. डाक शिकायत संबंधी सूचना... 16

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय
सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड, माहिलपुर (होशियारपुर)
पिन-146105
website:-aavpashram.com
Email- aavpmahilpur@gmail.com

सम्पादकीय

पर उपकार वचन मन काया।
संत स्वभाव सहज खगराया।।

प्रिय पाठक वृंद,

संत महिमा वह समुद्र है जिस से तुम जितना चाहो लाभ ले लो पर वह सदैव ज्यों का त्यों रहता है। संत का अर्थ वस्त्र से न होकर चरित्रगत है। समदर्शी जन सर्वत्र प्रभू प्रसार को देखता हुआ सदैव जन कल्याण भाव से कर्म रत्त होकर विचरता है। उसका यह चरित्र ही इसे शुभ अशुभ से ऊँचा ले जाकर केवल लीला रूप जीवन जीते हुए ऐसी विकर्म की स्थिति में ले जाता है। जहां उसे कर्म अकर्म दोनों ही प्रभावित नहीं कर पाते।

संत स्वभाव कैसे बने ?

बार बार हरि भजन में चित्त जोड़े। किसी को पढ़ने की बजाए स्वयं को पढ़े।

''जां बोले तां ब्रह्म ज्ञान, ऐहि निश लागा रहे ध्यान।''

प्रभू महिमा का गुणगान करे न कि स्वयं के अभ्यास के अनुभव बताए।

प्रेमी से प्रेमी मिले चले प्रेम की बात।
गधे से गधा मिले चले दुनिया की बात।।

अलख

प्रवचन ब्रह्मलीन सद्गुरु देव स्वामी अलखानन्द जी महाराज

भगवद् प्रेमी सज्जनों,

सबसे पहला लक्ष्य है सत्संग। सत्संग से तात्पर्य साक्षात् शान्ति वह शान्ति जो आये व आकर लौटे नहीं ज्यों की त्यों बनी रहें, यही सहज लक्ष्य है। वह परमशान्ति अर्थात सबसे ऊंची शान्ति या शाश्वत जो सदैव रह सके, जीवन में अनेक प्रकार की घटना, दुर्घटनाएं भी आती हैं। दुर्घटनाएं , घटनाएं न आयेंगी ऐसा नहीं है यह सब को ही आई है। घटना और दुर्घटना में सम रह जाना, शान्त रह जाना, दृष्टा बनकर रह जाये यह कैसे सम्भव हो ? उसका क्या आधार है ? अगर समझ कर थोड़ा सा अभ्यास कर जाये। अभ्यास का तात्पर्य है उस संचित को बार बार दोहराना पहले जानना, जानकर फिर उसको दोहराना जब तक जानते नहीं तब तक क्या अभ्यास करें और जब तक किसी चीज़ का अभ्यास नहीं करेंगे तो संचित भी नहीं कर सकते वहां टिक नहीं सकते।

जैसे एक बच्चे को अक्षर लिखना नहीं आता तो मास्टर बार बार लिखवाते हैं कि इस तरह लिखो यह इसके दो या तीन भाग कर देता है कि पहले ऐसे बनाओ फिर ऐसे कुण्डी खींचो फिर इधर को ले जाओ इतना बड़ा, इतना छोटा लाईन बना देता है कि यह तो इस लाईन के अन्दर आयें यह इस लाईन से बाहर जायें, इन्हीं युक्तियों द्वारा धीरे धीरे बहुत तेज गति से जल्दी जल्दी लिखने लग जाता है। हे प्राणी जो प्रथम अवस्था है वह ज्यादा तबज्जो देने की है बहुत ज्यादा समझने की अवस्था है, जो प्रथम अवस्था को समझ जाये जो प्रथम अवस्था में रूक कर, टिक कर समय देकर जान जाये, चित्त देवें, शास्त्र सम्मत होवे, शास्त्र गवाही देते हैं, जब संत तुलसीदास जी वंदना करते-करते गुरू वन्दना पर आये और उस समय क्या कहते हैं।

मैं गुरू महाराज जी के चरणों की जोकि कमल रूपी हैं की वंदना करता हूं। ऐसे चरण जिन पर आश्रित जीव भवसागर में डूबता नहीं। किसके ? श्री हरि के परमात्मा कहो, रब कहो, वाहिगुरू कहो, अल्ला कहो या गॉड कहो यह सब अक्षर हैं, यह तो वाचक शब्द हैं पर जो इनका वाच्य है, उसके लिए जरा सूक्ष्मता से विचार करना यानि जैसे कहा फूल यह वाचक शब्द हो गया पर फूल इसका वाच्य है, जैसे रेलगाड़ी वाचक शब्द हो गया तो वाच्य के लिए रेलवे लाइन या रेलवे स्टेशन पर ले जाओ वहां जो रेलगाड़ी है वही वाच्य है। दुनिया में जो भी पदार्थ के नाम है वह उसका वाचक है।

इसी प्रकार से राम, ओम, हरि ईश्वर, परमात्मा कहना तो सीखा है परन्तु यह सारे के सारे अक्षर रट्टे हैं। कोई रट रहा था हमने भी रटना शुरू कर दिया, माता पिता, बन्धु, कोई पड़ोसी गुरू जी, पंडित जी रट रहे थे सो हम भी रटने लग गये हम भी कहने लग गये। तो कहने जा रहे थे जो सुबह उठते ही कहते हैं लाओ चाय और उनसे तो भाई बहुत अच्छे हो कुछ करते हो सुबह उठते ही, उत्तम वचनों द्वारा उठाते हैं और परमात्म लोरियों द्वारा उठाते हो, यह बड़ी सुन्दर बात, होनी चाहिए, अगर ऐसा करते हुए यह बात उनके काम में आएगी जो माला तो फेरता है कुछ मन्त्र भी जपता है चाहे कुछ

भी जपता है, गुरू जी ने बताया या अपने आप से जपता है किसी पुस्तक से पढ़कर किसी शास्त्र से पढ़कर या माता पिता ने बताया, या फिर किसी पड़ोसी ने बताया किसी न किसी प्रकार से जैसे भी जपता है, अगर जपता है तो मेरे वचन उसके काम आयेंगे क्योंकि यहां तक तो करता है और इसी प्रकार से माता लोरी देकर बच्चे को जगाती है।

अगर माता छोटी सी कहानी सुनाकर रात्रिकाल में बच्चे को सुलाती है बच्चों को छोटी छोटी कहानियां जो परमात्म के विषय में हों, किसी न किसी प्रकार से अगर सुनाओगे तो बड़ी सुंदर बात अच्छे संस्कार पड़ेंगे, सारी रात बच्चा इस कहानी के तात्पर्य में सोयेगा बड़ी सुंदर बात बड़ी जल्दी संस्कार बदलेंगे तो तब माता सुबह बच्चों को सुन्दर लोरी देकर जगाती है भला ऐसी माता का ऋण बच्चा दे सकता है क्या कभी? जीवन भर नहीं दे सकता। हे प्राणी! माता के हाथ में बहुत बड़ी शक्ति है माता जो कुछ चाहे बच्चे को बना सकती है।

इस विषय में कथा याद आती है कि माता मदालसा हुई, जब पुत्र पैदा हुआ तो पिता ने मुहूर्त निकलवाया कि पुत्र का मुंह कब देखूं। मुहूर्त से तात्पर्य होता है कि पिता के ग्रह कौन से हैं, पुत्र के ग्रह कौन से हैं, इसमें कौन से ग्रह इसमें मिलान कर जायें सबसे पहले वह है, इसका नाम मुहूर्त होता है। *मुहूर्त निकलवा कर पुत्र का मुंह देखा मुंह चूम कर कहा कि वाह! एक दिन यह सम्राट होगा, चक्रवर्ती राजा होगा तो रानी ने सिर हिलाया कि नहीं।*

काश!..... !काश कोई माता ऐसी नहीं होती जो कि बच्चों को राजा नहीं बनाना चाहेगी और यह क्या कहती है कि नहीं यह सम्राट नहीं होगा ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता राजा ने कहा कि सम्राट तो इसे मैं बनाऊंगा, तू कैसे रोक सकती है। रानी ने दोबारा इन्कार न किया, एक बार इंकार किया तो राजा ने इन्कार को तीन चार बार काटा तो रानी ने दोबारा हां न काटी अर्थात इसी बात पर डटी रही समय आया, राजा जैसे कक्ष से बाहर निकला, वैसे ही रानी ने अपनी सेविका को आदेश दिया कि जाओ इस कमरे में शीघ्रातिशीघ्र वह चित्र लगाओ जो सन्यासी थे, पूर्ण सन्यासी थे और सच्चे साधू हों, खोज खोज कर चित्र लगाओ और ऐसी ऐसी कथाऐं, वार्ताएं हों, *ब्राह्मण को आदेश दिया कि उनकी कथाएं बताएं जो सन्यासी होकर परम कल्याण कर गये हैं, अपना भी औरों का भी,* बस इस कमरे में वही चर्चा रहे और कुछ नहीं।

ऐसा वातावरण तैयार किया, वही संस्कार अपने अन्दर भी परम शुद्ध संकल्प और दूसरी कोई बात नहीं परमात्मा के अतिरिक्त और कोई चर्चा नहीं हो जाये। होते होते बच्चा बड़ा होने लगा तो मां से कहा मुझे आदेश दो, आज्ञा दो क्या? कि घर छोड़ूंगा बस चल दिया, चलकर सद्मार्ग में जुटता है जुट गया तो दूर तक चला गया। दूसरा पुत्र हुआ फिर यही बात तीसरा पुत्र हुआ तो यही बात, चार पुत्र हो चुके ठीक ऐसा ही किया जब पांचवा पुत्र हुआ तो राजा ने कहा रानी मैं हारा तुम जीत गईं। क्या एक पुत्र राज्य करने योग्य भी बना सकती हो? कहा बना सकती हूं तो मैं यहां माता की शक्ति याद करवा रहा हूं।

माता अगर चाहे तो क्या नहीं कर सकती, पिता चाहे तो इतना नहीं कर सकते तो खैर फिर कहने जा रहे थे जिस समय राजा ने रानी से कहा कि अब जो भूल हो गई सो हो गई अब तुम एक पुत्र राज के याग्य बनाओ तो रानी ने कक्ष का वातावरण बदला तथा कक्ष में राजाओं—वीरों—

महावीरों के चित्र लगवाये जोकि पूर्ण भक्त थे, गृहस्थ में रहते पूर्ण उच्चकोटि के भक्त हुए, यानि राज्य भी किया और भजन ध्यान भी किया और पूर्ण उतरे, ऐसा वातावरण, ऐसा माहौल खड़ा किया उन्हीं की कथा-कहानियां बार्ताएं आदि चलने लगीं तो बच्चा थोड़ा सा बड़ा हुआ तो माता से पूछता है माता मैं राज दरबार में चला जाऊं। माता की आज्ञा पाकर पिता के विधान को समझता है, राज्य के कार्यों को समझता है, सुनता है। समझता है कि पिता जी किस प्रकार से निर्णय लेते हैं। धीरे धीरे वह काम में हाथ बटाने लगा। छोटी अवस्था में ही इस तरफ चला तो माता ने कहा मैंने चार पुत्र तो अत्यन्त योग्य बना दिये जिन्होंने लोक संभाल लिया, परलोक सुधार लिया जिनके लिए कहा गया।

काल पकड़ चेला किया, भय के कतरे कान।
हम सत्तनाम सिमरन करें, किसको करें सलाम।।

पांचवा कहीं भवसागर में गोते न खाये, भव सागर कहते तो हैं, गाते भी हैं, क्या होता भवसागर।

भगसागर गहरा घना जी, बहा जात संसारा।
कहें कबीर उसे पार उतारूं, जो कोई होय हमारा।।

कहते संसारी जीव बहते जा रहे हैं, भवसागर बहुत गहरा है। क्या होता है भवसागर? भव+सागर भव नाम भावनाओं का प्रात: उठते ही पाओगे कि कुछ भावनाएं बीती थी,किसी से लड़कर सोऐ थे, लड़ाई के ख्याल में, अच्छा उसने ऐसा क्यों कहा था? ऐसे क्यों हुआ? अब क्या होगा? वह लड़ाई के संस्कार सामने आ गये या फिर कोई मित्र, रिश्तेदार आये उससे जो बाते हुईं थी। राग यानि लगाव, द्वेष यानि घृणित। यह दो प्रकार की स्थिती उठते समय के साथ ही आ गई है, फिर कुछ और आई, उधेड़ बुन शुरू हो गई उठने के साथ ही कुछ ख्याल आये थे, और होते-होते यह ख्याल तेज़ हो गये होते-होते फिर तो ताबड़ तोड़ कुछ न कुछ ख्याल हर वक्त बना हुआ है कोई न कोई ख्याल हर वक्त बना हुआ दौड़ रहा है। कैसे करें, कैसे हटाएं, इन ख्यालों को अगर रोकना हटाना चाहो तो हटा सकते नहीं, रोकना चाहो रोक नहीं सकते, इस कारण से डूबना कहा है, अगर हमारे बस का होता, तो डूबना न कहते। चूंकि पानी इतना ज्यादा गहरा हो, जिसमें चल सकते नहीं, रूक नहीं सकते, बहना पड़ गया है, पानी गहरा है, फिर इस प्रकार से भवसागर गहरा घना तो इसको भी समझना। गुरूवाणीकार ने नक्शा बड़ा सुन्दर खींचा।

सोचए सोच न होवई जे सोचे लखवार।।

हे प्राणी! जो तूं सोचता है बेकार है, इससे कुछ सिद्ध न होगा, कितना सोच ले चाहे, लाख बार भी सोच ले तो भी कोई अर्थ सिद्ध न होगा यानि यह दोनों तेरे बस के बाहर है इसको भवसागर कहते हैं, जो लिव लगी है जो लौ लगी है, जो श्रंखला है वह कड़ी से कड़ी जुड़ी है। हर वक्त डूबा है *'भोजन कर रहा है पर डूबा है, चाय पी रहा है पर डूबा है बात कर रहा है, फिर भी डूबा है, जो कुछ कार्य कर रहा है, स्नान भी कर रहा है तो भी डूबा है। सच पूछो तो देखना कुछ लोग माला फेरते, तो भी मन कहीं न कहीं डूबा है। देखना तज़र्बा करके देखना, जिव्हा से कह रहा है, ओम नमो शिवाये—2 एक उंगली अलग भी रख रहा है,* क्योंकि यह तो उंगली लगानी नहीं।

ओम नमो शिवाय-2 तत सत्।
हरि ओम नमः भगवते वासुदेव, वासुदेव।।

कोई पुस्तक-पोथी, खोलकर पाठ किये जा रहा है जो कुछ भी किये जा रहा है, हर समय भवसागर में डूबा है, इसको जरा ध्यान से देखना शायद, है कहीं पढ़कर, रटकर या पोथी का पाठ करके रख दिया

हुआ क्या? मन ने कब किया? कब हुआ? यह शायद ही न किया होगा तो कहते हैं सोचे से जो नहीं हो रहा, जो हटाना रोकना चाहे तो होता नहीं। दोनों बातें बस के बाहर इसको पकड़ जा तो फिर कहने जा रहे थे कि हे प्राणी! इसको भवसागर कहते हैं, जिसकी चाह नहीं, जब से यह होश संभाली तब से भवसागर में डूब रहा है। ज़रा सी भी होश संभाली तोतली जुबान में बातें करने लगा, माता-पिता-भाई-बहन चाव के साथ तेरी इन बातों को तेरे साथ कहने लगे। पुत्र-पुत्र करने लगे बस यह भवसागर प्रारम्भ है, जाग उठा है और शायद कब तक जागा रहेगा?

बड़े भाग्य पाईयेव सतसंगा,
बिन ही प्रयास होहिं भवभंगा।।

कहते बिन प्रयास बिना मेहनत के भव भंग होता है। भवसागर ढूंढता है, जिसको भवसागर कह चुके हैं हर वक्त श्रंखला हर वक्त आया-गया लेन-देन कई झगड़े पड़े हैं अच्छा-बुरा कुड़-कुड़ कर रहा है, जल रहा है, किसी न किसी प्रकार ईर्ष्या वश जल रहा है, कहीं अधिकता में डूब रहा है, कहीं कमी में डूब रहा है, इसी का नाम मोह है।

मोह निशा सब सोवन हारा

मोह रूपी रात्रि में सोया है बस यह जो सोया-सोया कह रहा है, यह भवसागर ही है तथा भवसागर को समझना बड़ा जरूरी है। *अगर कोई कुछ शुभ कर्म करने निकलता है, जैसे कोई पूजायें, पाठ, तीर्थ या कोई शुभ कर्म वहां पर भी माया मुखोटा बनाने को बाध्य कर देती है कि मुझे कोई देख रहा है, मेरी फोटो आ रही है या नहीं* मुझे किसी ने देखा या नहीं, जो चढ़ाया वो किसी ने देखा या नहीं, वहां आकर माया कठिनाई खड़ी कर देती है। वहां भी रहने नहीं देती, वहां पर भी मैं-मैं चारों तरफ से माया का ऐसा राज है, ऐसी कठिनाई है। हे प्राणी! तो तब कोई बिरला जागता, चेतता है जोकि सत्संग से प्यार करे। सत्संग ऐसी चीज़ है, **सत+संग मतलब जो तीनों काल रहे, वह सत्त? वह है, वह था, वह रहेगा। संग से तात्पर्य, उसकी संगत करना, मेल करना जो ऐसा निर्मल सत्संग करे तो पहले शांति होती है।** लौट लौट कर अपने घर में आता है। दिन रात भागदौड़ में पड़ा था:—

दौड़ रहा दिन रात सदा
जग के सब काज बिहारन में

हर समय दौड़ा जा रहा था, भाग-दौड़ में लगा था

स्वपने सम विश्व दिखाय मुझे,
मेरे चंचल चित को मोड़ दिया।
ऐसी करी गुरूदेव दया,
मेरे मोह का बन्धन तोड़ दिया।।

क्यों? कैसे? कहीं रटाया कुछ नहीं कि यह रट, वह रट, क्योंकि रटना भी भवसागर के ही अन्तर्गत है, पर गुरू ने रटाया कुछ नहीं।

एक बार एक राजा शिकार खेलने निकला शिकार करते करते इतना दूर निकल आया कि प्रात: से दोपहर हो गई और इसी दौरान और साथी व मन्त्री-सैनिक आदि भी बिछुड़ गये और राजा अकेला ही राह की तलाश में भटकता रहा चलते-चलते राजा को एक झोंपड़ी नज़र आई उसने घोड़ा झोंपड़ी के बाहर बांधा व अन्दर प्रवेश किया तो देखा कि अन्दर एक तोता पिंजरे में रखा हुआ था। ज्यों ही तोते की नज़र पड़ी तोता जोर जोर से चिल्लाने लगा पकड़ो-पकड़ो, इसे पकड़ो। राजा जैसे ही देखने के लिए बाहर निकला तो किसी ने तीर मारा, राजा अपनी व घोड़े की जान किसी तरह बचाकर वहां से निकला, परन्तु इसी बीच घोड़ा तीर द्वारा घायल हो गया, फिर भी तेज़ दौड़ कर उस स्थान से काफी दूर

निकल आया। आगे कहीं जाकर एक शहतूत के पेड़ पर तोता टंगा था पास में महात्मा की कुटिया थी तो तोता बोला आओ जी, बैठो, पानी पीओ, छाया में बैठकर आराम करो। राजा ने सुना तथा घोड़ा खड़ा कर कुटिया में प्रवेश किया देखा कि महात्मा शान्त वृति में बैठे हैं, राना ने महात्मा को नमस्कार किया, तो संगत का पता चला कि संगत क्या होती है वह भी एक तोता था, और यह भी एक तोता है। उसे वह सिखाया गया और इसे विनम्रता का पाठ पढ़ाया गया। हे प्राणी! शास्त्र कहता:—

हानि कुसंग, सत्संगति लाहू ।

परमात्मा से जो विमुख है, वह कुसंग है, अब ज़रा बड़ी कठिनाई हो जाएगी रावण भी तप करता था, पूजायें करता था। *रावण भी शिवलिंग पर कुछ चढ़ा रहा है, पर हे प्राणी यह बड़ी कठिनाई है पहचाना नहीं जाता, क्या ? कौन है ? साधू है या असाधू, ढोंगी है या साधू,* यहां आकर लोग कठिनाई में पड़ जाते हैं। बिना सत्संग के पहचान भी नहीं होती, पूजायें कर रहा है, पर कुछ पाने के लिए कर रहा है, मांग है, दरिद्री है, दरिद्री का अर्थ होता है क्या ? जिसे पेट भर खाने को भी नहीं मिले वह दरिद्री नहीं। चाहे कुछ नहीं चाहे बहुत कुछ है पर चित्त का न भरना। मन, चित्त, बुद्धि, हृदय का न भरना, और चाहिए और चाहिए। सत्संग में पहली घटना यह जिसको घटित हो वह आनन्द से भरे, निज की अपनी कमाई को खोजें कमाकर खाने की सोचे और अपनी कमाई पर आश्रित रहे, ठगी चतुराई, चापलूसी और-और प्रकार का अन्न, इससे बचने की सोचे, अपनी कमाई में उतरे तो मान लो उसने संगत करी है, अच्छाई की तरफ को चला है, लौटा है, उल्टा है, बड़ी सुंदर बात है। हे प्राणी! निज की कमाई ज्यादा काम आती है

क्रमश:.....

स्वस्थ कौन ?

01. जो अक्रोधी स्वच्छ स्वभाव,
जिनका हिंसा रहित स्वभाव
जिन्हें न पर निन्दा में चाव,
जो न रखे बहुरंगे भाव।।
कर व्यायाम नित्त रहे मस्त,
उसको जानो है सुस्वस्थ।।

02. जिनके हृदय स्नेह कुलीन,
रहे धर्म में नित्त लवलीन,
जो न होय इन्द्रिय आधीन,
जो नहीं काम सरोवर मीन।।
कभी न किसी को करे त्रस्त,
उनको जानो है सुस्वस्थ।।

03. जिनके भाव सद गंभीर,
जो निज मन में रखते धीर।
जो है सदा कर्म में वीर,
अनुभव करे पराई पीर।।
दु:ख में कभी न होवे पस्त,
उनको जानो है सुस्वस्थ।।

04. जो नहीं कपटी लंपट जार,
नित्त रत रहते पर उपकार।
रखे सर्वदा शुद्ध विचार,
मोह मद काम को कर क्षार।।
जिन पर रहे प्राकृति का हस्त,
उनको जानो है सुस्वस्थ।।

05. करे जो नित नियमित व्यायाम,
सुधारे सब लोगों के काम।।
थकावट का ले कभी न नाम,
शक्ति भर पहुंचावे आराम।।
भोगते जो आदर्श गृहस्थ,
उनको जानो है सुस्वस्थ।।

ਗੁਰੂ ਸੇਵਾ

ਗੁਰੂ ਸੇਵਾ ਜਨ ਬੰਦਗੀ, ਸੁਮਰਣ ਔਰ ਵੈਰਾਗ।
ਯੇਹ ਚਾਰੋਂ ਤਬ ਹੀ ਮਿਲੇਂ, ਜਬ ਪੂਰਨ ਹੋਵੇ ਭਾਗ॥

ਸਾਡੇ ਸਦਗ੍ਰੰਥ ਇਹ ਗੱਲ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਗੁਰੂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਤਾਂ ਬੜੇ ਵੱਡੇ ਭਾਗਾਂ ਨਾਲ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਪਰ ਇਹ ਵੀ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ **ਸੇਵਾ ਗੁਰੂ ਕੀ ਸਫ਼ਲ ਹੈ ਜੇ ਕੋਈ ਕਰੇ ਮਨ ਲਾਏ।**

ਯਾਨੀ ਸੇਵਾ ਤਾਂ ਕਰਨੀ ਚੰਗੀ ਹੈ ਪਰ ਸਫਲ ਕਦੋਂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜਾਂ ਫੁਲਦੀ ਕਦੋਂ ਹੈ ਜਦੋਂ ਮਨਚਿੱਤ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸੇਵਾ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ ਸੇਵਾ ਵਿੱਚ ਹੀ ਰਹੇ। ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਤਨ ਸੇਵਾ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਪਰ ਮਨ ਕਿਤੇ ਇੱਧਰ ਉੱਧਰ ਚੱਕਰ ਲਾਉਣ ਚਲੇ ਗਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤਾਂ ਫਿਰ ਉਸ ਸੇਵਾ ਨੂੰ ਸਫਲ ਨਹੀਂ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਜਿਵੇਂ ਕਿ–

ਸੇਵਕਾ ਸੇਵਾ ਭਾਵ ਬਿਨ ਭਵ ਨ ਤਰੈ ਉਰਗਾਰ।
ਭਜੀਏ ਰਾਮ ਪਦ ਪੰਕਜ ਅਸ ਸਿਧਾਂਤ ਵਿਚਾਰ॥

ਸੋ ਅਰਥ ਇਹੀ ਹੋਇਆ ਕਿ ਮਨ ਨਾਲ ਕੀਤੀ ਗਈ ਸੇਵਾ ਸੁਮਰਣ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਵੀ ਸਹਾਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਪੂਰਨ ਗੁਰੂ ਹੀ ਪੂਰਨ ਸੇਵਾ ਕਰ ਤੇ ਕਰਵਾ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪਿੱਛੋਂ ਤਾਂ ਫਿਰ ਨਕਲ ਹੀ ਰਹਿ ਜਾਂਦਿ ਹੈ। ਜਿਦਾਂ ਕਿ—

'ਪੱਥਰ ਪਾਨੀ ਪੂਜਕੇ ਸੇਵਾ ਜਾਸੀ ਬਾਧ।
ਸੇਵਾ ਕਰਲੇ ਸਾਧ ਦੀ, ਸੱਤਨਾਮ ਕਰ ਯਾਦ॥

ਸੇਵਾ ਦਾ ਧਰਮ ਬੜਾ ਕਠੋਰ ਧਰਮ ਹੈ। ਪਰ ਲਗਨ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਕਠੋਰ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ, ਕਿਉਂ ਕਿ ਸੇਵਕ ਦੇ ਸਿਰ ਉਪਰ ਪੂਰਨ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਬਣੀ ਹੋਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਉਹ ਜਿਧਰ ਵੀ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਨੂੰ ਹੀ ਦੇਖਦਾ ਹੈ। ***'ਸੇਵਕ ਕੌ ਸੇਵਾ ਬਨਿ ਆਈ, ਹੁਕਮ ਬੂਝ ਪਰਮ ਪਦ ਪਾਈ।'*** ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਵੀ ਗੁਰੂ ਆਗਿਅ ਨਾਲ ਹੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

'ਗੁਰੂ ਕੀ ਆਗਿਆ ਆਵੇ, ਗੁਰੂ ਕੀ ਆਗਿਆ ਜਾਹੀਂ,
ਕਹੇ ਕਬੀਰ ਤਾ ਦਾਸ ਕੌ, ਤੀਨ ਲੋਕ ਡਰ ਨਾਹੀਂ।

ਸੋ ਸੇਵਕ ਦੀ ਗਤੀ ਹੀ ਨਿਆਰੀ ਹੈ। ਉਹ ਸਿਰਫ ਤੇ ਸਿਰਫ ਇਕ ਸੇਵਕ ਹੀ ਸਮਝ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਕੋਈ ਕੀ ਜਾਣੇ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੇਵਕਾਂ ਦਾ ਵੀ ਕੋਈ ਅੰਤ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਕਿਥੋਂ ਤਕ ਜਾਨ ਦੀ ਬਾਜ਼ੀ ਲਾਕੇ ਗੁਰੂ ਸੇਵਾ ਵਿੱਚ ਨਿਤਰੇ ਤੇ ਆਪਣਾ ਨਾਮਣਾ ਖੱਟਿਆ। ਅਰੂਣੀ, ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ਿਵਾ ਜੀ ਮਰਹੱਟਾ, ਭਾਈ ਲਹਿਣਾ ਜੀ ਜੋ ਕਿ ਪਿੱਛੋਂ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਨਾਂ ਨਾਲ ਸਿਖਾਂ ਦੇ ਦੂਸਰੇ ਗੁਰੂ ਵਜੋਂ ਜਾਣੇ ਗਏ। ਭਾਈ ਨੇਕ, ਭਾਈ ਕਨਹਿਆ, ਬੀਬੀ ਭਾਨੀ, ਭਾਈ ਜੇਠਾ, ਭਰਤ ਅਤੇ ਲਛਮਣ ਜੀ ਆਦਿ। ਸਮੇਂ ਸਮੇਂ ਤੇ ਸੇਵਕਾਂ ਨੇ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਤੇ ਆਪਣੇ ਪੂਰਣ ਗੁਰਾਂ ਪਾਸੋਂ ਬਖ਼ਸ਼ੀਸ਼ਾਂ ਵੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੀਆਂ, ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ ਭਾਈ ਮੰਝ ਜੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਸਭ ਤੋਂ ਅਦੁੱਤੀ ਤੇ ਸਭ ਤੋਂ ਕਠਿਨ ਵੀ ਕਹੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਉਸ ਦੀ ਸੇਵਾ ਵਾਰੇ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਅਪਾਰ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਾਲ ਹੀ ਕੁਝ ਕੁ ਸ਼ਬਦ ਲਿਖਣ ਦੀ ਸੇਵਾ ਦਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਹੀ ਕੁਝ ਲਿਖਣ ਦੇ ਯੋਗ ਹਾਂ।

ਕਹਾਣੀ ਕੁਝ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ ਕਿ ਹਰ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਜੀਵ ਹਨ। ਗੁਰੂ ਦੇਵ ਸਭ ਤੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਭਾਈ ਮੰਝ ਦੇ ਸਮੇਂ ਗੁਰੂ ਦਰਵਾਰ ਵਿੱਚ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਭਗਤ ਵੀ ਸੀ ਜੋ ਕਿ ਸਦਾ ਇਹੀ ਸੋਚਿਆ ਕਰਦਾ ਸੀ ਕਿ ਕੋਈ ਮੇਰੇ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਸੇਵਕ ਵੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਘਰ ਦੀ ਹਰ ਸੇਵਾ ਵਿੱਚ ਅੱਗੇ ਰਹਿੰਦਾ ਹਾਂ। ਪਰ ਸਭ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਦੀ ਜਾਨਣਹਾਰੇ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਕਦੇ ਮੁੱਖ ਤੋਂ ਇਹ ਬਚਨ ਨਹੀਂ ਉਚਾਰਦੇ ਕਿ ਤੂੰ ਸੇਵਾਦਾਰ ਹੈ ਜਾਂ ਉਹ ਘੱਟ ਸੇਵਕ ਹੈ। ਉਥੇ ਤਾਂ ਸਖਿਆਤ ਨਿਪਟਾਰੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਸੋ ਠੀਕ ਇਥੇ ਵੀ ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੀ ਕੁਝ ਭਾਣਾ ਇਵੇਂ ਹੀ ਵਾਪਰਿਆ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਦਿਖਾਇਆ ਜਾਵੇ ਕਿ ਕੌਣ ਵੱਡਾ ਸੇਵਕ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵੀ ਦੁਨਿਆਂ

ਦੇ ਇਮਤਿਹਾਨਾਂ ਨਾਲੋਂ ਅੱਲਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸਿਰਫ ਸੇਵਕ ਹੀ ਕੁਝ ਕੁਝ ਸਮਝ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਗਲਤੀ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ ਹੁਣ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਹੀ ਕੁਝ ਸੁਧਾਰ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਉਸ ਸਮੇਂ ਉਸ ਸੇਵਕ ਨੂੰ ' ਜੋ ਅਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਵਧੀਆ ਸੇਵਕ ਵਜੋਂ ਸਮਝ ਬੈਠਾ ਸੀ ' ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਭਾਈ ਮੰਝ ਦੇ ਪਾਸ ਉਸਦੇ ਘਰ ਭੇਜਦੇ ਹਨ। ਭਾਈ ਮੰਝ ਤੋਂ ਕੁਝ ਰਾਸ਼ੀ ਦਰਵਾਰ ਲਈ ਸੇਵਾ ਵਾਸਤੇ ਭੇਜਣ ਲਈ ਸੇਵਕ ਚਿੱਠੀ ਲੈ ਕੇ ਗਿਆ। ਜਦੋਂ ਮੰਝ ਨੇ ਪੜ੍ਹੀ ਤਾਂ ਥੋੜੀ ਉਦਾਸੀ ਹੋਈ ਕਿ ਘਰ ਵਿੱਚ ਗਰੀਬੀ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਰਾਸ਼ੀ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਫਿਰ ਸੋਚਿਆ ਕਿ ਪਿੰਡ ਦਾ ਸ਼ਾਹੂਕਾਰ ਲੜਕੀ ਤੇ ਮੋਹਿਤ ਹੈ। ਕਿਉਂ ਨਾਂ ਉਸ ਪਾਸੋਂ ਕੁਝ ਰਾਸ਼ੀ ਲੈ ਕੇ ਗੁਰੂ ਸੇਵਾ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਸੇਠ ਨਾਲ ਬਾਦ ਵਿੱਚ ਲੜਦੀ ਦੀ ਸਾਦੀ ਕਰ ਦਿਆਂਗੇ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ ਪਰ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਅਜੇ ਪੂਰੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਹੋਈ। ਫਿਰ ਸੇਵਕ ਕੁਝ ਦੇਰ ਪਿਛੋਂ ਚਿੱਠੀ ਲੈ ਕੇ ਦਰਵਾਰ ਤੋਂ ਆ ਗਿਆ। ਹੁਣ ਚਿੱਠੀ ਪੜ੍ਹੀ ਤਾਂ ਹੋਰ ਚਿੰਤਾ ਹੋ ਗਈ ਕਿ ਕੀ ਕਰੀਏ ? ਫਿਰ ਮੰਝ ਦੀ ਘਰ ਵਾਲੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਮੈਨੂੰ ਗਿਰਵੀ ਰੱਖਕੇ ਜੋ ਰਕਮ ਮਿਲੇ ਉਹ ਭਿਜਵਾ ਦਿਉ। ਸੋ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਰੋਇਆ।

ਭਾਈ ਮੰਝ ਨੇ ਫਿਰ ਸੋਚਿਆ ਕਿ ਘਰ ਇੱਕਲੇ ਰਹਿਕੇ ਕੀ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਘਰ ਜਾਕੇ ਨਾਲੇ ਸੇਵਾ ਕਰਾਂਗਾ, ਨਾਲੇ ਰੋਟੀ ਖਾ ਲਿਆ ਕਰਾਂਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜੋ ਨਿਰਣਾ ਲਿਆ ਸੀ ਹੁਣ ਉਹ ਨਿਰਣਾ ਤਾ ਪੂਰਨ ਨਿਰਣਾ ਹੋ ਕੇ ਹੀ ਨਿਬੜਨਾ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਘਰ ਤੋਂ ਸ਼ਾਇਦ ਸੰਦੇਸ਼ ਵੀ ਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਜਦੋਂ ਕੁਝ ਦੇਰ ਤੋਂ ਉਹ ਘਰ ਬਾਹਰ ਦਾ ਕੰਮ ਮੁਕਾ ਕੇ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਗਏ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ(ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ) ਆਪਣਾ ਮੂੰਹ ਫੇਰ ਲਿਆ। ਮਤਲਬ ਕਿ ਉਸਨੂੰ ਦੇਖਿਆ ਵੀ ਨਾਂ ਤਾਂ ਹੀ ਤਾਂ ਸੇਵਾ ਕਠਿਨ ਨਹੀਂ ਬਹੁਤ ਕਠਿਨ ਧਰਮ ਕਿਹਾ ਹੈ—

'ਸੇਵਾ ਬੜਾ ਹੇ ਧਰਮ ਕਠੋਰ,
ਸੇਵਾ ਕੋ ਸੇਵਕ ਜਨ ਸਮਝੇ
ਕੀ ਸਮਝੇ ਕੋਈ ਔਰ।'

ਭਾਈ ਮੰਝ ਨੇ ਨਹੀਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮੈਂ ਤਾਂ ਸਭ ਕੁਝ ਤਿਆਗ ਕੇ ਆਇਆ ਹਾਂ ਮੇਰਾ ਕੋਈ ਮੁੱਲ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ ਬੱਸ ਫਿਰ ਕੀ ਸੀ, ਸੇਵਕ ਸੇਵਾ ਲਈ ਆਇਆ ਸੀ। ਜੋ ਸੇਵਾ ਦੇਖੀ ਕਰਨ ਲੱਗਾ। ਇਕ ਦਿਨ ਗੁਰੂ ਮਾਹਾਰਾਜ ਪੁਛਦੇ ਕਿ ਮੰਝ, ਤੂੰ ਕੀ ਕਰਦਾ ਹੈ ? ਤਾਂ ਉਸ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਮੈਂ ਗਊਆਂ ਚਰਾਉਂਦਾ ਹਾਂ। ਫਿਰ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸੇਵਾ ਕਿਸਦੀ ਹੋਈ, ਜਦ ਕਿ ਪੁੱਛਣ ਤੇ ਮੰਝ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਜੀ ਰੋਟੀ ਲੰਗਰ ਖਾਂਦਾ ਹਾਂ। ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਹੋਰ ਸਖ਼ਤ ਰੂਪ ਧਾਰਣ ਕਰ ਰਹੀ ਸੀ। ਮੰਝ ਨੇ ਰੋਟੀ ਖਾਨੀ ਛੱਡ ਦਿੱਤੀ ਤੇ ਲੰਗਰ ਲਈ ਸੁਕੀਆਂ ਲੱਕੜੀਆਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਤੇ ਗਊਆਂ ਚਰਾਉਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਰੱਖਿਆ। ਜਦੋਂ ਸ਼ਾਮ ਨੂੰ ਗਊਆਂ ਚੋਅਕੇ ਕੁਝ ਦੁੱਧ(ਡੋਕਾ) ਬਚਦਾ ਤਾ ਉਹ ਪੀ ਕੇ ਪੇਟ ਭਰ ਲੈਂਦਾ ਸੀ।

ਕੁਝ ਦਿਨ ਬਾਦ ਫਿਰ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਹੋਇਆ ਕਿ ਖਾਂਦਾ ਕੀ ਹੈ। ਭਾਈ ਮੰਝ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਦੁੱਧ ਚੋਣ ਤੋਂ ਬਾਦ ਬਚਦਾ ਜੋ ਡੋਕਾ ਹੈ ਉਹ ਮੈਂ ਪੀਂਦਾ ਹਾਂ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਨਰਾਜ ਹੋਕੇ ਕਹਿਨ ਲੱਗੇ ਕਿ ਤੂੰ ਬੱਛੜਿਆਂ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਪੀਂਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਭੁੱਖੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹੋਣਗੇ। ਫਿਰ ਭਾਈ ਮੰਝ ਨੇ ਫੈਸਲਾ ਲਿਆ ਕਿ ਮੈਂ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਖਾਵਾਂਗਾ। ਅਤੇ ਉਹੀ ਹੋਇਆ ਜਿਸਦਾ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੂੰ ਇੰਤਜਾਰ ਸੀ।

ਮੰਝ ਗਊਆਂ ਚਰਾਉਂਦਾ, ਲੰਗਰ ਦੀਆਂ ਲੱਕੜਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਦਾ ਰਿਹਾ, ਜਦੋਂ ਭੁੱਖ ਲੱਗੀ ਤਾਂ ਥੋਹਰ ਦੇ ਪੱਤੇ ਜੋ ਕਿ ਖੱਟੇ ਸਨ, ਖਾਣ ਵੇਲੇ ਤਾਂ ਕੌੜੇ ਨਾਂ ਲੱਗੇ, ਪਰ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਉਸ ਦੇ ਨਸੇ ਨੇ ਅਸਰ ਕਰਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਭਾਈ ਮੰਝ ਨੇ ਗਊਆਂ ਚਰਾ ਕੇ ਸ਼ਾਮ ਹੋਈ ਤਾਂ ਵਾਪਿਸ ਗੁਰੂ ਘਰ ਨੂੰ ਆਉਣਾ ਸੀ। ਲੰਗਰ ਵਾਸਤੇ ਸੁੱਕੀਆਂ ਲੱਕੜਾਂ ਸਿਰ ਤੇ ਰੱਖੀਆਂ ਸੀ। ਅੱਧ ਕੁ ਵਿਚਕਾਰ ਉਸ ਦੇ ਪੈਰ ਥਿਰਕੇ ਤੇ ਨਸ਼ੇ ਦਾ ਖੁਮਾਰ ਵੀ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ ਖੁਹ ਦੇ ਵਿੱਚ ਗਿਰ ਗਏ। ਪਾਣੀ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸ਼ਰੀਰ ਡੁੱਬਨ ਕਰਕੇ ਥੋੜਾ ਨਸ਼ਾ ਤਾਂ ਉਤਰ ਗਿਆ। ਪਰ ਭਗਤ ਨੇ ਲੱਕੜਾ ਦਾ ਗੱਠਾ ਹੈਠਾਂ ਨਹੀਂ ਡਿੱਗਣ ਦਿਤਾ, ਉਸਨੂੰ ਪਾਣੀ ਤੋਂ ਉਪਰ ਹੀ ਰੱਖਿਆ।

ਉਧਰ ਕੀ ਰੋਇਆ ਕਿ ਗਊਆਂ ਤਾਂ ਸ਼ਾਮ ਪੈਣ ਕਰਕੇ ਵਾਪਿਸ ਟਿਕਾਣੇ ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਗਈਆਂ,

ਚਲਦਾ.....

विचारणीय वचन

गताङ्क से आगे.....

जो गुरू का हो गया, जो गुरूमुख है। दूसरा क्या जाने। जान सकता भी नहीं। यह पूछो वेदों से, उपनिषदों से। दूसरा और कोई उपाय नहीं। एक मार्ग और कोई रास्ता नहीं। ज्ञान केवल गुरू से होता है। गुरू तो बहुत बन बैठे, सब नगरों के जितने भी नाम है, उन सबसे ज्यादा गुरूओं की गणना है। प्राणी इस बात को भूल गया, कि जो भी हमने गुरू बनाये, क्या वो सच्चा है। वो कुछ यज्ञ, तप कोई पूजा पाठ करता है, इमानदार है, मीठा बोलते हैं, इत्यादि इत्यादि बाते देखकर गुरू बनाये हैं।

यह तो कपटी और भी ज्यादा अच्छा कर सकता है। ज्ञान नाम की चीज़ कुछ और है। पहले इस बात को स्वीकार कि जो सदग्रन्थ तत्ववेताओं द्वारा रचित हो किताबें नहीं किताबें और बात। सदग्रन्थों में यहां ज्ञान शब्द आये, वहां खोजना क्या होता ज्ञान।

गुरू बिन होई कि ज्ञान ज्ञान के होय बैराग बिन।।

गुरू के बिना ज्ञान नहीं होता। नंगे पांव घूमना, वस्त्रहीन रहना, भूखा रहना, तीर्थ यात्रा करना, ये बातें बैराग नहीं। अज्ञानता है मेरा भाई। बैराग तब होता है, जब ज्ञान हो। जैसे दुकानदार ग्राहक बहुत आते रहे, सुबह से शाम तक। और खाना डिब्बे में बन्द पड़ा है। खा नहीं सक रहा है क्योंकि, वो सौदा बेच रहा है। ऐसे ही ज्ञान में चित्त देने के लिए, अभ्यास के लिए, जो कुछ छोड़ना पड़ रहा है, जिस के छोड़े काम चलता है, दुनिया का काम घटाते घटाते चित्त मन बुद्धि ज्ञान में जा रहा है। पहले ज्ञान हो तो बुद्धि देगा। अगर ज्ञान ही ना हो तो बुद्धि कहां से लगाएगा। पहली बात ज्ञान, फिर वैराग। गुरू के बगैर दोष खत्म नहीं होते। ज्ञान उत्पन्न नहीं होता ।

गुरू बिन ज्ञान न उपजे। गुरू बिन मिटे न दोष।।
गुरू बिन लखे न सत्त को।।

सत्त का दर्शन नहीं होता। जो था, जो है, जो रहेगा, जो किसी ने घड़ा नहीं रचा नहीं, ब्रह्मा जी ने बहुत सारी सृष्टियां रचीं पर वह नाम, किसी ने भी नहीं रचा। ज्ञान उसका बोध होना, जो रचा नहीं, जो कहा नहीं। जब जिब्हा हुई, आकाश हुआ तो शब्द हुए हैं अक्षर हुए हैं। यह किसी ने घड़े रचे, बनाये। इनके मेल से सहायता ली, जिसका भेद देने की हमारी बात को समझे। हम उसकी समझे सुनें। यह तो बनाये। लेकिन ज्ञान इनसे पहले है। सृष्टियों से पहले, ब्रह्मा जी से पहले तो उसका कहना ही क्या। ज्ञान तो अनादि काल से एक है। एक था, एक रहेगा। उसको जानने का नाम ज्ञान है।

'ज्ञान अन्जन गुरू दिया, अज्ञान अन्धेर विनास'

गुरू महाराज ने ज्ञान दिया। ज्ञान का मतलब जानना अज्ञान का मतलब ना जाननापन अर्थात् अज्ञान का विनास कर दिया भली प्रकार से नाश, विशेष नाश, बाकी नहीं रहने दिया कुछ।

''हरि कृपा ते संत भेंटिया नानक मन प्रगास''

क्या भेंट दिया? प्रकाश।

क्या कहता रामायण कार:—

'परम प्रकाश रूप भगवाना, नहीं तहां पुनि विज्ञान बिहाना ''

हम तो कहीं मूर्तियों को भगवान कह रहे हैं, कैलेण्डरों को भगवान कह रहे हैं। पितरों को भगवान कह रहे हैं पर तुलसी दास जी कह रहे

भगवान के बारे कह रहे हैं ***''परम प्रकाश रूप भगवाना''*** उसमें सुबह, शाम, दोपहर का मतलब नहीं। प्रातः काल सूर्य आरम्भ होता है, दोपहर को बहुत तेज है, संध्या काल को फिर क्षीण हो जाता है। यानि बदलाहट होती है। लेकिन भगवान के प्रकाश के लिए ऐसी बात नहीं। वो हर वक्त है, एक रस है, शीतल है, शान्त है।

परम प्रकाश रूप दिन राती
नहीं चाहिए कछु दिया घृत बाती।।

भगवान का रूप परम प्रकाश है वह दिन रात है, दीपक की कोई जरूरत नहीं। बत्ती तेल माचिस की कोई ज़रूरत नहीं। अपने आप लटा लट प्रकाश है उर में?

राम भक्तिः तीन चीज़ों का मिलान एक होना भक्ति है। जैसे कि तीन फूल एक किये, ऐसे ही तीन चीज़ों का एक होना, मन चित्त कहलो एक बात, दूसरी बात अनुभव या बोध अविनाशी का ज्ञान। अविनाशी, जिसका कभी नाश नहीं, जो किसी ने नहीं बनाया, उसका अनुभव उसको ही पकड़ना। पकड़ना क्या होता है।

एक बच्चा चारपाई पर बैठा है, मां साथ बैठी है, दीपक जल रहा है, दीपक को पकड़ना चाहता है। मां कह रही है हट जा जल जायेगा। कहे जा रही है। हटाये जा रही है। क्या होता है हट जा इसका कोई पता नहीं उसे। और जल जाएगा, कुछ पता नहीं क्या होता है। मां बार बार हटाये जा रही है। एक क्षण के लिए माता का ध्यान इधर-उधर हुआ, बच्चे ने दीपक को पकड़ना चाहा, और हाथ जल गया। तो रो रहा है, अब माता को कहने की जरूरत नहीं कि हट जा। अनुभव हो गया भीतर कि यह जल गया। कोइ जीव जन्तु काट जाये, उससे बच्चा डरता है फिर भय भी दिखाया जाता है, माऊँ करके कहा जाता है। ऐसे ही बर्फी, पेड़े का टुकड़ा मूंह में लगाया तो उसको पता लगा कि इस ड़िब्बे में से लिया। तो उस का ध्यान, मन, चित्त ड़िब्बे में चला गया। चित्त पकड़ा गया। भय से भी, जब थप्पड़ लगा तो रूका। हृदय का काम तो अनुभव है। दुख और सुख कैसा हो अनुभव करना हृदय का काम है। तो जब अनुभव हुआ तो उसका नाम ज्ञान है। यह तो बाहर का अनुभव, बाहर का ज्ञान हुआ। बस उसी हृदय में, उसी अन्तःकरण में भगवान का अनुभव होना, उसका ज्ञान होना, जिसने सारा विश्व रचा। जिसने सब पुरियां पाताल बनाये, जिसने ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी रचे।

एक नहीं अनेक सृष्टियां रचीं। उन सृष्टियों में अनेक सागर, पर्वत, औषधियां, बड़े-बड़े दरिया, हीरे जवाहरात, नाना प्रकार के जीन जन्तु, मनुष्य देवता, स्वर्ग, नरक जिसने सारा कुछ रचा। हे प्रेमी! उसी ने तेरे कायागढ़ को भी रचा। माता पिता तो कहीं निमित्त मात्र है। वो प्रभु तेरे अन्दर तेरे घट में बैठा है, गा तो रहा है नः—

''मन मन्दिर तन वेष कलन्दर घट ही तीर्थ नाहवां
एक शब्द मेरे प्राण बसत है बोहर जन्म नहीं आवा''

कभी सोचा, कभी पूछा, घट में ही अनुभव होगा, जब भी होगा, बाहर नहीं। वो घट में बस रहा है। बाकी बसाने पड़ते हैं, रचने पड़ते हैं।

एक शब्द गुरूदेव का जाका अनन्त विचार
थाके मुनिजन पण्डित वेद न पावे पार।।

अनन्त विचार तो है, पर एक। अनन्त यानि जिसका अन्त नहीं आता और और। क्योंकि लिखा जाता ही नहीं। अकथ है, देखा जाता ही नहीं। अनबना है। जो एक है, उसका अनुभव कैसे होता है, बस यह तो गुरू जाने या शिष्य जाने।

क्रमशः.....

'विशुद्ध अध्यात्मिक संवाद'

प्रश्नः- हे गुरू महाराज! माया क्या है?

उत्तरः- आत्म तत्व के विचार के बिना जो बाकी विचार आएं, जिधर भी मन जाए वह माया है।

प्रश्नः- यदि हमें किसी व्यक्ति के कुकर्म देखकर प्रभु की याद आए तो क्या वह माया है?

उत्तरः- याद है तो आबाद है— चाहे कैसे भी आए।

प्रश्नः- सदगुरू क्या है?

उत्तरः- दुनिया की हर वह स्थिति, हर वह व्यक्ति सदगुरू है जो तुझे अन्तर्मुख कर जाए।

प्रश्नः- हम सारा जीवन गुरू महाराज को पूर्ण दृष्टि से क्यों नहीं देख पाते?

उत्तरः- क्योंकि तुम्हारी चमड़े की बनी आंखें सदगुरू में भी चमड़ा ही देखती हैं जबकि सदगुरू का अर्थ है बोध। जिन्होंने कबीर को जुलाहा करके देखा वो उसे सदगुरू करके नहीं देख सके क्योंकि एक ही चीज़ दिखाई पड़ेगी या चाम या राम।

प्रश्नः- हमें संश्य क्यों आ जाते हैं?

उत्तरः- हर व्यक्ति का एक दृष्टिकोण होता है जब कोई वस्तु उसमें पूरी समाहित न हो पाए तो संश्य उत्पन्न हो जाता है। जैसे एक व्यक्ति घर से मन बनाकर चलता है कि गुरू महाराज मुझे बुलाएंगे या हंसेगे पर जब गुरू दरबार में पहुंचने पर ऐसा न हो तो संश्य उत्पन्न होता है। ऐसा व्यक्ति यह भी सोचता है कि गुरू महाराज तो मन की बात जानते हैं फिर मेरी मन की बात क्यों पूरी न की। यही है अहंकार का मूल।

प्रश्नः- संश्यों से कैसे बचें?

उत्तरः- रोज़-रोज़ पाठ किया करो—ज्यों गुरू राखे त्यों रहें (सब हंसने लगे)

प्रश्नः- ज्ञान और कर्मकाण्ड में अंतर क्या है?

उत्तरः- कर्मकाण्ड तो था शुद्धता या सात्विकता पूर्वक जीवन का निर्वाह करने हेतु रीतियां। ज्ञान है सब कर्मों में बर्तते हुए पूर्णता का बोध।

प्रश्नः- कर्मकाण्ड में जो पूजा पाठ, ग्रह नक्षत्र, इत्यादि सब कुछ कितना सही है?

उत्तरः- सही वही है जिसका विज्ञान और गणित तुम्हें पता हो अन्यथा सब भ्रम है।

प्रश्नः- कबीर कहते हैं प्रेम और नेम का मेल नहीं? तो क्या नियम नहीं होना चाहिए?

उत्तरः- इस वचन का पूर्ण अर्थ यह है कि यदि प्रेम हो तो नेम की आवश्यकता नहीं पर प्रेम जगेगा कैसे इसके लिए नेम ही आधार है। न पढ़ने वाले बच्चे को जबरदस्ती बिठाया जाता है पर जब उसे शौक या प्रेम जग जाए तो नियम नहीं देने पड़ते फिर तो वो स्वयं ही पढ़ता है।

प्रश्नः- अनहद नाद, ध्यान, सुमिरण आदि की क्रियाएं तो शास्त्र लिखित हैं फिर गुरू का अर्थ क्या है जिंदगी में?

उत्तरः- क्रियांए इतनी ही नहीं, बहुत हैं, लाखों हो सकती हैं पर इन सब के पीछे क्या भेद है? तुम इन्हें महत्व पूर्ण क्यों समझते हो?

सेवकः- क्योंकि हम शांति चाहते हैं।

गुरू महारजः- क्या शांति क्रियांओं से संभव है? यदि होती तो तुम्हें केवल क्रियाएं ही करवाई जाती पर आज क्रिया करने वाले भी अशांत हैं करवाने वाले भी इसलिए मेरा संदेश सत्तनाम

शेष भाग पृष्ठ 13.....

Cont......

Dhammapada

Ob!i j!wf sf ob!wf sboj!tbn n boijei b!l vebdbobn
bwf sf ob!db!tbn n boij!f tb!ei bn n p!tbobobop/2

N f bojoh!.!I busf e!jt-!joef f e-!of wf s!bqqf btf e!cz!i busf e!jo!ui jt!x psme/ Ju!jt!bqqf btf e!pomz!cz!mpwjoh.!l joeoftt/Ui jt!jt!UI F!TBOBUBO EI BSNB/

Ui f!Tupsz!pg!Lbmhzbl l i joj

!!!!!!X i jmf!sf tjejoh!bu!ui f!Kfubwbob n pobtuf sz!jo!Tbwbui j-!ui f!Cveei b vuf sf e!bcpwf!tbje!wf stf!cf dbvtf pg!bo!jodjef ou/

Podf!ui f sf!mjwf e!b!i pvtf. i pmef s-!xi ptf!x jgf!x bt!cbssf o<!mbuf s i f!uppl !bopui f s!x jgf /!Ui f!gf ve tubsuf e!xi f o!ui f!!mf s!x jgf!dbvtf e bcpsujpo!pg!ui f!pui f s!pof-!xi p fwf ouvbmmz!ejf e!jo!di jme!cjsui /!Jo mbuf s!f yjtuf odf t!ui f!ux p!x f sf sf cpso!bt!b!i f o!boe!b!dbu<!b!epf boe!b!mfpqbsef tt<!boe!gjobmmz!bt!ui f ebvhi uf s!pg!b!opcmfn bo!jo!Tbwbui j boe!bo!phsftt!obn f e!Lbmj/!Ui f phsftt!)Lbmhzbl l i joj*!x bt!jo!i pu qvstvju!pg!ui f!mbez!xju i !ui f!cbcz- xi f o!ui f!mbuf s!mfbsof e!ui bu!ui f Cveei b!x bt!of bscz-!hjwjoh!b sfmjhjpvt!ejtdpvstf!bu!ui f!Kfubwbob n pobtuf sz/!Ti f!gme!up!i jn !boe qmbdf e!i f s!tpo!bu!i jt!gf fu!gps qspuf dujpo/!Ui f!phsftt!x bt!tupqqf e bu!ui f!epps!cz!ui f!hvbsejbo!tqjsju pg!ui f!n pobtuf sz!boe!x bt!sf gvtf e ben jttjpo/!Ti f!x bt!mbuf s!dbmme e!jo boe!cpui !ui f!mbez!boe!ui f!phsftt x f sf!sf qsjn boef e!cz!ui f!Cveei b/

Ui f!Cveei b!upme!ui f n !bcpvu ui fjs!qbtu!gf vet!bt!sjwbm!x jwf t!pg!b dpn n po!i vtcboe-!bt!b!dbu!boe!b i f o-!boe!bt!b!epf!boe!b!mfpqbsef tt/ Ui f z!x f sf!n bef!up!tf f!ui bu!i busf e dpvme!pomz!dbvtf!n psf!i busf e-!boe ui bu!ju!dpvme!pomz!df btf!ui spvhi gsjf oeti jq-!voef stuboejoh!boe hppex jmm/

Ui f o!ui f!Cveei b!tqpl f!jo wf stf!bt!gpmmpx t;

Wf stf!6;!I busf e!jt-!joef f e-!of wf s bqqf btf e!cz!i busf e!jo!ui jt!x psme/ Ju!jt!bqqf btf e!pomz!cz!mpwjoh. l joeoftt/Ui jt!jt!bo!bodjf ou!mbx/ Bu!ui f!f oe!pg!ui f!ejtdpvstf-!ui f phsftt!x bt!f tubcmjti f e!jo!Tpubqbuuj Gsvjujpo!boe!ui f!mpoh.tuboejoh!gf ve dbn f!up!bo!f oe/

Qbsf!db!ob!wjlbobouj[2]
n bzbn fui b!zbn bn btf[3]
zf!db!ubui b!wjlbobouj[4]
ubup!tbn n boij!n fei bhb/

N f bojoh!;!Qf pqmf-!pui f s!ui bo!ui f x jtf-!ep!opu!sf bmj{f-!«X f!jo!ui jt x psme!n vtu!bmmhejf -»!)boe-!opu

sf bmj{joh! ju-! dpoujovf! ui fjs
rvbssfm*/!Ui f!xjtf!sfbmj{f!ju!boe
ui fsfcz!ui fjs!rvbssfmdf btf/

!Ui f!Tupsz!pg!Lptbn cj!Ci jl l i vt

Xi jmf! sftjejoh! bu! ui f
Kfubwbob!n pobtufsz!jo!Tbwbui j-!ui f
Cveei b!vuf sfe!Wf stf!)7*!pg!ui jt
cppl -! xjui ! sfgf sfodf! up! ui f
ci jl l i vt! pg! Lptbn cj/! Ui f
ci jl l i vt!pg!Lptbn cj!i be!gpsn fe
joup!ux p!hspvqt/!P of !hspvq!gpmmpx fe
ui f!n btufs!pg!Wjobzb!boe!ui f!pui fs
gpmmpx fe! ui f! ufbdi fs! pg! ui f
Ei bn n b! boe! ui fz! xf sf! pgufo
rvbssfmjoh!bn poh!ui fn tf mwft/
Fwf o!ui f!Cveei b!dpvme!opu!tupq
ui fn !gspn !rvbssfmjoh<!tp!i f!mfgu
ui fn !boe!tqf oui f!wbttb-!sftjef odf
qf sjpe!pg!ui f!sbjot-!bmhbmpof!jo
Sbl l i jub!Hspwf!of bs!Qbmjmfzzbl b
gpsftu/!Ui f sf-!ui f!fmfqi bou!Qbmjmfzzb
x bjuf e!vqpo!ui f!Cveei b/

Ui f!mbz!ejtdjqmft!pg!Lptbn cj-
po!mfbsojoh!ui f!sf btpo!gps!ui f
efqbsuvsf!pg!ui f!Cveei b-!sfgvtf e
up!n bl f!pggf sjoht!up!ui f!sfn bjojoh
ci jl l i vt/!Ui jt!n bef!ui fn !sfbmj{f
ui fjs!n jtubl f!boe!sfdpodjmjbujpo
uppl !qmbdf!bn poh!ui fn tf mwf t/!Tujmm
ui f!mbz!ejtdjqmft!x pvme!opu!usfbu
ui fn !bt!sftqf dugvmmz!bt!cf gpsf-!voujm
ui fz!boe!ju!x bt!jo!ui f!n jeemf!pg!ui f
wbttb<!tp!ui f!ci jl l i vt!pg!Lptbn cj
tqf ou!ui f!wbttb!jo!n jtf sz!boe
i bseti jq/

Bu!ui f!foe!pg!ui f!wbttb-!ui f
Wf of sbcmf! Boboeb! boe! gjwf
i voesfe!ci jl l i vt!bqqspbdi fe!ui f
Cveei b!boe!hbwf!ui f!n fttbhf!gspn
Boobui bqjoejl b! boe! pui fs! mbz
ejtdjqmft!jn qmpsjoh!i jn !up!sfuvso/
Jo!evf!dpvstf!ui f!Cveei b!sfuvsofe
up! ui f! Kfubwbob! n pobtufsz! jo
Tbwbui j/!Ui f!ci jl l i vt!gpmmpx fe
i jn !ui f sf-!gf mmepx o!bu!i jt!gf fu!boe
px of e!vq!ui fjs!gbvmu/!Ui f!Cveei b
sfcvl f e!ui fn !gps!ejtpcf zjoh!i jn /
I f!upme!ui fn !up!sfn f n cfs!ui bu!ui fz
n vtu! bmm! ejf! tpn f! ebz! boe
ui fsfgpsf-!ui fz!n vtu!tupq!ui fjs
rvbssfmt!boe!n vtu!opu!bdu!bt!jg!ui fz
x pvme!ofwfs!ejf!px of e!vq!ui fjs!gbvmu
up!ui f!Cveei b/!Cvu!ui f!Cveei b!x bt
bx bz/

✻ ✻ ✻ ✻

Up!cf!dpoujovfe///////

पृष्ठ 11 का शेष......

में उतरने का है। क्रिया कोई भी हो, मैं कहता हूं शून्यता की बात। सवाल तो उठता है प्रवेश करने का। तुम सुमिरण के दरवाज़े से करो या ध्यान के। इसमें फर्क नहीं पर उस शून्यता में से जब जीव कभी अलग होता है तो संसार की ओर को खींचता है ऐसे समय में रक्षक होते हैं गुरू महाराज जिन्होंने बार-बार अंतर्मुख होने की प्रेरणा देनी।

❋ जीर्ण-कब्ज के ईलाज ❋

जीर्ण-कब्ज के रोगियों का उपचार क्रम

1. प्रात:जल्दी जागरण।

गर्मियों में 4-5 बजे के बीच में एवं सर्दियों में 5-6 बजे के बीच में बिस्तर अवश्य छोड़ दें।

2. उषापान अर्थात भरपेट पानी पीना

मुख शुद्धि करके गर्मियों में घड़े का शीतल जल एवं सर्दियों में गुनगुना अथवा रात का रखा तांबे के बर्तन का जल पीना एवं मुंह में पानी भरकर आंखो में अच्छी प्रकार से छींटे मारना।

3. किंग एवं क्वीन एक्सरसाइज

यदि उषापान के बाद थोड़ी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद शौच का वेग न लग रहा हो तो दो-तीन-पांच किंग एवं क्वीन एक्सरसाइज को करके शौच जायें। गरम पानी पीकर एवं इन आसनों के करने से शौच का वेग अवश्य लग जाता है।

4. गणेश क्रिया

शौच के पश्चात गणेश क्रिया अवश्य करें जिससे मलाशय में मल न चिपका रहे और यदि ऐसा लग रहा हो कि मल पूरा-पूरा नहीं निकला तो कम से कम दो तीन मिनट गणेश क्रिया लगातार अरण्डी के तेल से करने से अवश्य पेट साफ हो जाता है।

5. बस्ति क्रिया

सप्ताह में एक बार अच्छी प्रकार से बस्ति क्रिया द्वारा आंतों को साफ कर डालें। जीर्ण कब्ज के रोगी प्रारम्भ में लगातार 6-7 दिन बस्ति क्रिया करें। फिर कभी कभी विशेष जरूरत पड़ने पर करें। कभी कभी असमय में या शौचालय के अभाव में शौच का वेग लग आने के कारण शौच का वेग रोकना पड़ता है। ऐसी स्थिती में मल मलाशय से वापस बड़ी आंत की और लौट जाता है और फिर शौच जाने पर भी नहीं उतरता है। ऐसे समय पर बस्ति क्रिया, एनिमा या गणेश क्रिया करना सबसे अधिक सुरक्षित साधन है।

6. नेति क्रिया

दातुन-कुल्ला के पश्चात नियमित जल नेति अथवा नासापान करें। यदि रबर नेति अथवा सूत्रनेति कर लेते हों तो जलनेति क्रिया बाद में करें। नेत्र, सिर, मस्तिष्क एवं कफ के रोगों में बहुत उपयोगी होगी।

7. कुंजल क्रिया

सप्ताह में एक बार कुंजल क्रिया अवश्यक करें। इससे पाचन ठीक रहेगा। पाचन की विशेष गड़बड़ी में लगातार 3-4 दिन कुंजल करें।

8. यौगिक व्यायाम

कब्ज गैस के रोगियों को नियमित निम्नलिखित यौगिक व्यायाम करना अनिवार्य है:—

1. भ्रमण योग 10-20 मिन्ट।
2. उत्थान पादासन कम से कम 3 बार अधिक से अधिक 5 बार।
3. उदर पवनमुक्तासन कम से कम 3 बार, अधिक अधिक से अधिक पांच बार।
4. नौकासन पीठ के बल कम से कम तीन बार अधिक से अधिक 5 बार।
5. किंग-क्वीन कम से कम 25-25 बार, अधिक से अधिक 100-100 बार।
6. नौलि क्रिया कम से कम पांच मिनट, अधिक से अधिक दस मिनट।
7. श्वासन- दो मिनट से पांच मिनट तक।

क्रमश.....

ਦਿਵਾਲੀ

ਪ੍ਰਭੂ ਪ੍ਰੇਮੀ ਸੱਜਣੋ,

ਇਹ ਮਾਤਰ ਸੰਸਾਰਿਕ ਖੁਸ਼ੀ ਦੀ ਹੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਦਿਵਾਲੀ ਦਾ ਤਿਉਹਾਰ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ ਬਲਕਿ ਸੋਚਣ ਵਿਚਾਰਣ ਦੀ ਵੀ ਲੋੜ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਤਿਉਹਾਰ ਹਰ ਵਰ੍ਹੇ ਆਉਂਦਾ ਅਤੇ ਚਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਕੀ ਅਸੀਂ ਇਸ ਤੋਂ ਕੁਝ ਲਾਭ ਲਿਆ। ਕੀ ਅਜਿਹਾ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਕਿ ਸਿਰਫ ਖਾ-ਪੀ ਕੇ ਜਾਂ ਬਾਹਰੀ ਰੋਸ਼ਨੀ ਕਰ ਕੇ, ਦੀਵੇ, ਮੋਮਬਤਿਆਂ ਜਲਾ ਕੇ ਹੀ ਕੰਮ ਚਲਾ ਲਿਆ।

ਹਰ ਦਿਨ ਤਿਉਹਾਰ ਦਾ ਇੱਕ ਖਾਸ ਸੰਦੇਸ਼ ਵੀ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਆਮ ਮਾਨਤਾ ਵੀ। ਮਾਨਤਾ ਤਾਂ ਆਮ ਆਦਮੀ ਸਮਝ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਤਿਉਹਾਰ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸਕ ਪਿਛੋਕੜ ਕੀ ਹੈ ? ਕਿਉਂ ਮਨਾਇਆਂ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਆਦਿ ਪਰ ਸੰਦੇਸ਼ ਕੀ ਹੈ, ਇਹ ਆਮ ਜੀਵ ਦੇ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਬੈਠਦਾ। ਦਿਵਾਲੀ ਨਾਲ ਵੀ ਕੁੱਝ ਅਜਿਹਾ ਹੀ ਹੋਇਆ ਹੈ, ਇਸ ਦਿਨ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਚੰਦਰ ਜੀ ਅਯੁਧਿਆ ਵਾਪਸ ਆਏ, ਇਸ ਦਿਨ ਸਵਾਮੀ ਰਾਮਤੀਰਥ ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਮਾਏ, ਗੁਰੂ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਜੀ ਨੇ 52 ਰਾਜੇ ਮੁਕਤ ਕਰਵਾਏ ਆਦਿ, ਇਹ ਗੱਲਾਂ ਤਾਂ ਆਮ ਧਾਰਨਾ ਜਾਂ ਮਾਨਤਾਵਾਂ ਹਨ। ਸੱਚ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਇਹ ਗੱਲਾਂ ਕਲਿਆਣ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੀਆਂ। ਕਹਾਨੀ ਰਾਮ ਚੰਦਰ ਦੀ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਦੀ-ਕਹਾਣੀ ਤਾਂ ਸਿਰਫ ਕਹਾਣੀ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਦੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ ਇਹਨਾਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਤੋਂ ਬਹੁਤ ਅਲਗ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ ਹੈ-

ਸਾਸ ਸਾਸ ਸਿਮਰੋ ਗੋਬਿੰਦ।
ਮਨ ਅੰਤਰ ਕੀ ਉਤਰੇ ਚਿੰਤ॥

ਹਰ ਸਾਹ ਵਿੱਚ, ਹਰ ਸ੍ਵਾਸ ਵਿੱਚ ਸਿਮਰਣ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਜੀਵਨ। ਸਿਮਰਣ ਦਾ ਅਰਥ ਪਾਠ ਨ ਲਗਾ ਲੈਣਾ। ਪਾਠ ਰੱਟਾ ਤਾਂ ਹੈ ਪਰ ਸਿਮਰਣ ਨਹੀਂ। ਸਿਮਰਣ ਦਾ ਸਰਲ ਅਰਥ ਹੈ ਉਹ ਯਾਦ ਜੋ ਜੀਵਨ ਦਾ ਅੰਗ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਚਲਦੇ, ਫਿਰਦੇ, ਖਾਂਦੇ, ਪੀਂਦੇ ਸਦੈਵ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ***ਸਿਮਰਣ ਦਾ ਅਰਥ ਹੈ ਐਸਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਜਿਸ ਨਾਲ ਚਿੱਤ ਵਿੱਚ ਕਦੇ ਹਨੇਰਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ।*** ਜਦੋਂ ਸਮੇਂ ਦੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖ ਭੇਦ ਦੀ ਗੱਲ, ਗਿਆਨ ਦੀ ਗੱਲ ਜਾਂ ਕਹੋ ਕਿ ਤੁਹਾਡੇ ਅੰਦਰ ਦੀ ਗੱਲ ਦੱਸਦੇ ਨੇ ਉਹ ਸਮਾਂ ਤੁਹਾਡੀ ਦੀਵਾਲੀ ਦਾ ਹੈ।

ਮੁਰਸ਼ਿਦ ਨੇ ਹੱਥ ਸਿਰ ਤੇ ਧਰਿਆ।
ਦਿਸਿਆ ਅੱਖਾਂ ਬਿਨ ਨੂਰੇ ਇਲਾਹੀ॥

ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਕਿਰਪਾ ਦਾ ਹੱਥ ਸਿਰ ਤੇ ਧਰਦੇ ਹਨ ਉਸੇ ਸਮੇਂ ਇਲਾਹੀ ਨੂਰ ਦਾ ਦਰਸ਼ਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸ਼ਿਸ਼ ਦੀ ਉਸੇ ਸਮੇਂ ਦਿਵਾਲੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜਨਮਾਂ-ਜਨਮਾਂਤਰਾਂ ਦਾ ਹਨੇਰਾ ਦੂਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਗੁਰਬਣੀ ਕਾਰ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਨੇ ਆਖਿਆ ਹੈ-

ਅਗਿਆਨ ਅੰਧੇਰਾ ਕਟਿੱਆ।
ਗੁਰੂ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਚੰਡ ਬਲਾਇਆ।

ਸਦਗੁਰੂ ਨੇ ਕੋਈ ਅੰਧਕਾਰ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਅਗਿਆਨਤਾ ਦਾ ਅੰਧੇਰਾ ਕਟਿੱਆ। ਬਾਹਰਲਾ ਅੰਧਕਾਰ ਤਾਂ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਦੂਰ ਕੀਤੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ-ਮੋਮਬਤਿੱਆਂ ਨਾਲ ਜਾਂ ਵੱਡੀਆਂ-ਵੱਡੀਆਂ ਸਰਚ ਲਾਈਟਾਂ ਨਾਲ ਪਰ ਜੀਵ ਦੇ ਅੰਦਰ ਦਾ ਅਗਿਆਨ ਦਾ ਅੰਧਕਾਰ ਕੇਵਲ ਸਦਗੁਰੂ ਹੀ ਕੱਟ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਸਦਕਾ ਜੀਵ ਨੂੰ ਗਿਆਨ ਕਰਵਾਉਂਦੇ ਹਨ।

ਜੋ ਗੱਲਾਂ ਜੀਵ ਇਹਨਾਂ ਗ੍ਰੰਥਾ ਵਿੱਚ, ਸ਼ਾਸ਼ਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹੈ ਉਹਨਾ ਸਭ ਦਾ ਸਾਖਿਆਤਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਗਿਆਨ ਕਰਵਾਉਂਦੇ ਨੇ, ਉਹੀ ਸਮਾਂ ਸਹੀ ਸੱਚੀ ਦੀਵਾਲੀ ਦਾ ਹੈ। ਅੱਗੇ ਸ਼ਿਸ਼ ਦੇ ਹੱਥ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਸ ਕਿਰਪਾ ਭਰੀ ਦਿਵਾਲੀ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਸੰਭਾਲਦਾ ਹੈ। ਜੇ ਜੀਵ ਬਾਰ ਬਾਰ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਕੇ ਨਾਮ ਦਾ ਅਭਿਆਸ ਕਰੇ ਤਾਂ ਉਸ ਤੇ ਮਹਾਂਪੁਰਖਾਂ ਦਾ ਇਹੋ ਵਚਨ ਢੁਕਦਾ ਹੈ।

ਸਦਾ ਦਿਵਾਲੀ ਸੰਤ ਕੀ ਤੀਸੋਂ ਦਿਨ ਤਿਉਹਾਰ।
ਪ੍ਰੇਮ ਮਗਨ ਜੋ ਮਨ ਭਯਾ ਤੋ ਕੌਣ ਗਿਣੇ ਤਿੱਥ ਬਾਰ॥

❖ पावन श्री अलख ज्यन्ति समारोह ❖

निराकार की आरसी संतन की कर देह। लखा जो चाहे अलख को जा ही में लख लेह।।
जोगी आवे द्वार पे देता अलख जगाय। सदगुरू सांचा जो मिले तो देता अलख लखाय।।
पूरा सदगुरू जो मिले अलख ज्ञान दे जाए। मां मूंडो उस गुरू की जां से भ्रम न जाए।।

आनंदित हृदय से आपको सूचित किया जा रहा है कि पावन श्री **अलख ज्यन्ति महोत्सव 9-10 दिसंबर** को मनाया जा रहा है। जिसमें **स्वामी विशेषानंद जी** के दर्शनों प्रवचनों का पूर्ण लाभ मिलेगा।

कार्यक्रम इस प्रकार है :-

समयः- 09 दिसंबर 2015	भजन गायन.....	03 से 5 सांय तक।
	प्रवचन	सांय 05 से 06:30 तक।।
समयः- 10 दिसंबर 2015	गुरू पूजन.....	ब्रह्म मुहुर्त ।
	भजन गायन.....	प्रातः 7:30 से 9 तक ।
	प्रवचन.....	प्रातः 9 से 10:30 तक।।

कार्यक्रम में भाग लेने से पूर्व मानसिक तैयारी अर्थात अभ्यास का समय जरूर बनाएं। मानसिक तौर से जागा हुआ व्यक्ति ही गुरू पूजन का लाभ ले पाता है।

''जो जागत है सो पावत है। जो सोवत है सो खोवत है।''

— नोट —

01. अभ्यास 22 नवंबर से शुरू हो जाएंगे।
02. मौसम अनुसार बिस्तर / वस्त्र का प्रबंध करके चलें।
03. कार्यक्रम की जानकारी निम्नलिखित नम्बरों से प्राप्त करें:—

9646123514—9855018590—9464897263—9465964184

कार्यक्रम स्थल

अन्नपूर्णा माता मन्दिर नज़दीक किशनपुरा चौक (शमशानघाट के पीछे) जालंधर

22 नवंबर दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी। स्थान : गांव व डाक-नानोवाल, तहसील आनंदपुर साहिब **समय :** प्रातः 11 से 01 तक। **प्रार्थी : बिहारी लाल जी,**

29 नवंबर : अंतिम रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी। स्थान : गांव व डाक गढ़ मालती, तहसील बिलावर **समय :** प्रातः 11 से 01 तक। **प्रार्थी : श्री सतपाल जी**

By Post पत्रिका संबंधी विशेष सूचना

जो सज्जन पत्रिका डाक द्वारा मंगवाते हैं वे पत्रिका प्राप्त न होने पर आश्रम के नाम एक पत्र लिखें उस पत्र के द्वारा वास्तविक त्रुटिकर्ता को खोजा जाए एवं आवश्यकतानुसार कानूनी कार्यवाही की जा सके।